‘वीणा’ कक्षा 4 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह हर्ष का विषय है कि कक्षा 4 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक ‘वीणा’ आपके हाथ में है। इसका निर्माण करते हुए मुख्य रूप से ‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020’ एवं ‘विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023’ के दिशानिर्देशों को ध्यान में रखा गया है। भाषा सीखना राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा) का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के सहारे बच्चे अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ते हैं। बच्चों में बुनियादी एवं संवैधानिक मूल्यों की स्थापना, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति सतर्कता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम आदि को प्राप्त करने का माध्यम भाषा ही है। अतः यहाँ भाषा सीखने का तात्पर्य केवल पढ़ना और लिखना नहीं है, बल्कि बच्चों की जीवन-शैली सहित उनमें व्यावहारगत बदलाव का परिलक्षित होना भी है।

भाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी समाज और व्यक्ति के आचार-व्यवहार, खान-पान, सोच-समझ, लोक-संस्कृति आदि को जानना और समझना हो तो भाषा ही सहायक सिद्ध होती है। हमारी परंपरा और संस्कृति भी भाषा के माध्यम से ही संरक्षित होती आ रही है। भाषा की इस प्रकृति एवं प्रकार्यों का सापेक्ष संबंध विद्यालयी शिक्षा से जुड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों को अन्वेषण, सर्जनात्मक चिंतन और तार्किक चेतना के माध्यम से स्वयं ज्ञान सृजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। बच्चे भाषा को केवल नियमबद्ध व्यवस्था के रूप में न देखें, अपितु इसके सौंदर्यशास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक पक्ष को भी समझें। इन बिंदुओं के आलोक में पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से निम्नलिखित विचारों को ध्यान में रखा गया है—

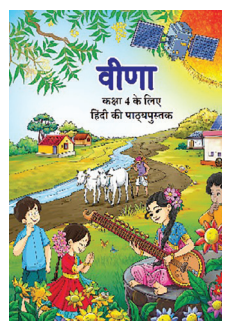

- पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, नाटक, पहेली, चुटकुलों आदि से बच्चों को रुचिपूर्ण तरीके से परिचय करवाया गया है। अभ्यासों को कुछ इस प्रकार विकसित किया

गया है जिससे बच्चों में भाषा के संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होगा।

- पाठों का क्रम सरल से जटिल एवं संश्लिष्ट की ओर बढ़ते हुए क्रम में व्यवस्थित किया गया है। साथ ही बदलती हुई ऋतुओं एवं पर्व-त्योहार के महीनों को भी ध्यान में रखते हुए पाठों को संयोजित किया गया है।
- पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।
- यह पुस्तक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश के इर्द-गिर्द अपना ताना-बाना रचती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से बच्चों में समावेशी दृष्टिकोण लाने और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक बोध विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है।
- विभिन्न भाषायी कौशलों, जैसे— समझ के साथ बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने और रचने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए बच्चों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।

पाठ्यचर्या के लक्ष्य

प्रारंभिक स्तर (प्रिपरेटरी स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

पाठ्यचर्या लक्ष्य-1: विचारों को सुसंगत रूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-2: परिचित और अपरिचित पाठ्यवस्तु (जैसे— गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थबोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-3: अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सरल और यौगिक वाक्य संरचनाओं को लिखने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-4: विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों (घर और स्कूल के अनुभव) में व्यापक शब्द-भंडार विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य-5: पढ़ने में रुचि और प्राथमिकताओं को विकसित करते हैं। पुस्तकालय से पुस्तकें पढ़ने में रुचि प्रदर्शित करते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में इन लक्ष्यों की प्राप्ति भी एक प्रमुख उद्देश्य है। पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ही ध्यान में रखते हुए दक्षताएँ निर्धारित की गई हैं और इन्हीं दक्षताओं की निरंतरता में सीखने के प्रतिफल तय किए गए हैं। यह पाठ्यपुस्तक, निर्धारित लक्ष्यों, दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफलों के समन्वित रूप को प्रतिबिंबित करती है।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्यसामग्री का संयोजन

पाठ्यक्रम में जिन विषयवस्तुओं का उल्लेख किया गया है, उन्हें पाठ्यपुस्तक के पाठों, चित्रों एवं अभ्यास-कार्यों में समंजित/एकीकृत करने का प्रयास किया गया है।

सांस्कृतिक वैविध्य और वैज्ञानिक प्रगति

पुस्तक का आरंभ 'ऐसा वर दो' प्रार्थना से किया गया है। इस संसार में जो वस्तुएँ हमें सहज ही प्राप्त हैं, प्रार्थना उनके प्रति विद्यार्थियों में कृतज्ञता का भाव पैदा करती है। यह भाव भारतीय परंपरा और संस्कृति के अनुकूल है तथा प्रासंगिक भी। इसके बाद 'चिड़िया का गीत' (कविता) और 'बगीचे का घोंघा' (कहानी) पाठों को लिया गया है। 'चिड़िया का गीत' कविता अपनी मधुरता और सरल भाषा द्वारा घर और बाहर के सांसारिक चित्रण को अंकित करती है तो वहीं 'बगीचे का घोंघा' कहानी संसार को कौतूहल की दृष्टि से देखने की उत्प्रेरणा देती है। 'नीम' कविता भारतीय परंपरा और संस्कृति में वृक्षों के महत्व के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति मित्रता के भाव को भी उद्घाटित करती है। इस कविता के अभ्यासों में नीम के साथ-साथ अन्य वृक्षों के महत्व के बारे में भी जानकारी दी गई है। 'भाँति-भाँति की पत्तियाँ' एक संक्षिप्त पाठ है जो विश्व की अनोखी पत्तियों से विद्यार्थियों का परिचय करवाएगा।

'हमारा आहार', 'गोलगप्पा', 'मिठाइयों का सम्मेलन' पाठ भारतीय खान-पान संबंधी व्यवहारों, विशेष व्यंजनों और पोषण से संबंधित हैं। बाजार में मिनटों में बनकर तैयार हो जाने वाले खाद्य-पदार्थों की भीड़ में स्वास्थ्य पीछे छूट जाता है। इसलिए स्वास्थ्य और स्वस्थ भोजन के बीच का संबंध महत्वपूर्ण है। 'हमारा आहार' कविता सरलता से इस विषय को प्रस्तुत करती है।

भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विविधता और वैज्ञानिक प्रगति भारत की एक महत्वपूर्ण पहचान है। पुस्तक में इस विशेषता को उद्घाटित करने के लिए विभिन्न साहित्यिक विधा वाले पाठ लिए गए हैं। 'ओणम के रंग' (निबंध), 'जयपुर से पत्र' (पत्र), 'चेरापूँजी के मेहमान' (लघुकथा) और 'हमारा आदित्य' (विज्ञानकथा) जैसे पाठ विद्यार्थियों में भारतीय भौगोलिक परिवेश और आधुनातन वैज्ञानिक प्रगति को जानने व भारतीयता को आत्मसात करने में सहायक होंगे। सूर्य-नमस्कार से अपनी दिनचर्या प्रारंभ करने वाला देश अब उससे मिलने के लिए अंतरिक्ष में जा पहुँचा है। इस अद्भुत परिघटना से बच्चों को साक्षात्कार करने का अवसर 'हमारा आदित्य' पाठ से मिलेगा।

विद्यार्थी जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। उनकी दिनचर्या में आनंद और हास्य नैसर्गिकता के साथ उपस्थित होता है। इसे समझते हुए 'आसमान गिरा' (कहानी), 'सुन, इमली के दाने सुन!', 'हवा और धूल' एवं 'कैमरा' जैसी कविताएँ बच्चों में जिज्ञासा बढ़ाने और उन्हें हँसाने-गुदगुदाने का माध्यम बनेंगी। इसके अतिरिक्त 'नकली हीरे' (चित्रकथा) पाठ विद्यार्थियों में विवेक, सत्यनिष्ठा और विनम्रता जैसे मानवीय गुणों को उत्प्रेरित करेगा।

पुस्तक में भारतीय ज्ञान परंपरा में विकसित कथा शैली के अनुपम उदाहरण उपस्थित हैं। 'कविता का कमाल' (लोककथा) और 'शतरंज में मात' (नाटक) पाठ इस ज्ञान परंपरा और कथा शैली से परिचय तो करवाएँगे ही, साथ ही विभिन्न साहित्यिक विधाओं के

अंतर को भी स्पष्ट करते हुए भाषा-प्रयोगों के विविध रूपों को बच्चों के समक्ष रखेंगे।

सारांशत: कहा जा सकता है कि प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थियों को विविध परिस्थितियों में मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति, समझ के साथ पढ़ना-सुनना, तार्किकता, रचनात्मकता, जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, मानवीयता आदि कौशलों से समृद्ध करेगी। समग्र रूप से इस पाठ्यपुस्तक में हमारी समृद्ध ज्ञान-परंपरा से लेकर आधुनातन वैज्ञानिक प्रगति तक की यात्रा को भाषा और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

मौखिक भाषा का विकास और लिखना

मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम बच्चों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना है। पाठ्यपुस्तक में बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने की दृष्टि से अभ्यास कार्य निर्मित किए गए हैं। हर पाठ की समाप्ति के बाद 'बातचीत के लिए' शीर्षक से कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिनमें हर बच्चा भाग ले सकता है और अपना अनुभव साझा कर सकता है। उदाहरण के लिए, 'चिड़िया का गीत' कविता में बातचीत के लिए दिए गए प्रश्नों में एक प्रश्न है, "जब कोई अतिथि आपके घर आता है या आप किसी संबंधी के यहाँ जाते हैं तो आपको कैसा लगता है?" एक अन्य उदाहरण 'बगीचे का घोंघा' कहानी से है, "आप घूमने के लिए कहाँ-कहाँ जाते हैं और किसके साथ जाते हैं?" ऐसे प्रश्न सभी विद्यार्थियों को अपने-अपने अनुभवों के आधार पर अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हैं। मातृभाषा एवं बहुभाषिकता की भावना को पोषित करने की दृष्टि से भी ये प्रश्न उपयुक्त हैं।

पाठों के अभ्यास में विद्यार्थियों के लिए छोटे-छोटे वाक्य निर्माण की गतिविधियाँ दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये सरल हों। उदाहरण के लिए, 'मिठाइयों का सम्मेलन' पाठ में यह प्रश्न दिया गया है, "स्वस्थ रहने के लिए आप क्या-क्या करते हैं? इससे संबंधित पाँच वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए"। मौखिक से लिखित भाषा की ओर बच्चों की भाषा-यात्रा सुगम और सरल हो, इसका ध्यान रखा गया है। कक्षा 4 में लिखने और पढ़ने संबंधी गतिविधियों को विकसित करने पर विशेष बल प्रदान किया गया है।

कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता

पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में कल्पना विशेष स्थान रखती है। विद्यार्थी अपनी दिनचर्या में ढेरों कल्पनाएँ करते हैं या फिर कुछ-न-कुछ सोचने और करने के प्रयोग करते रहते हैं। कुछ पाठों के अभ्यास में ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिनसे विद्यार्थी कल्पना की दुनिया में प्रविष्ट हों, साथ ही सही अथवा गलत उत्तर के दबाव से मुक्त हों। उदाहरण के लिए, 'कविता का कमाल' पाठ के अभ्यास में एक प्रश्न है कि "विजेता बनने के बाद मदन को मीडिया के प्रश्नों के उत्तर देने पड़े। अपने को मदन मानते हुए इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।" ऐसा ही प्रश्न 'हमारा आदित्य' पाठ में भी दिया गया है, "यहाँ पर आदित्य-एल 1 और सूर्य के बीच बातचीत हो रही है। आप इस बातचीत को आगे बढ़ाइए।"

जिज्ञासा और खोजबीन करना बच्चों की मूल प्रवृत्ति में से एक है। इसे ध्यान में रखते हुए संबंधित गतिविधियों को पाठों में शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए, 'जयपुर से पत्र' पाठ के अभ्यास के एक प्रश्न में पूछा गया है कि "जंतर-मंतर क्या है? भारत में यह जयपुर के अतिरिक्त और कहाँ-कहाँ स्थित है?" इस प्रकार के प्रश्न बच्चों में खोजबीन करने की प्रवृत्ति को बढ़ाएँगे।

रचनात्मकता मन की बात करने और सृजन करने का अवसर प्रदान करती है। पुस्तक में रचना और बच्चों के बीच के संबंध को जोड़ने और प्रक्रिया को बनाए रखने हेतु कई ऐसी गतिविधियाँ दी गई हैं जो रोचक हैं। उदाहरण के लिए, पाठ्यपुस्तक में 'कागज की छतरी' और 'कागज की पुतलियाँ' बनाने जैसी रोचक गतिविधियाँ दी गई हैं। ऐसी गतिविधियाँ बच्चों की रचनात्मकता को उभारने का कार्य करेंगी। विद्यार्थियों का पुस्तक से जुड़ाव स्थापित करने में भी ये गतिविधियाँ सहायक सिद्ध होंगी।

परिवेश, संवेदनशीलता एवं समेकन

पाठ्यसामग्री का संयोजन करते हुए ध्यान रखा गया है कि बच्चे इन सामग्रियों से जुड़कर अपने परिवेश के प्रति और भी संवेदनशील बनें। पाठों व अभ्यासों में पर्यावरण और विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने वाली गतिविधियाँ दी गई हैं। महिलाओं और पुरुषों की सार्थक एवं संतुलित भागीदारी से समाज और राष्ट्र निर्मित होता है। अतः पाठ्यपुस्तक में जेंडर संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए पाठों और चित्रों में संतुलित दृष्टि अपनाई गई है। उदाहरण के लिए, पुस्तक में 'मति की उड़ान' पाठ के अंतर्गत पहली भारतीय महिला पायलट की चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त भारतीय परंपरा एवं संस्कृति, विभिन्न अनुशासनों तथा कलाओं का पाठ्यसामग्री के साथ उपयुक्त शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि से समेकन किया गया है।

बहुभाषिकता और अनुभवजन्य शिक्षण-अधिगम

बहुभाषिकता भारत की सामासिक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। शिक्षण-अधिगम के क्षेत्र में बहुभाषिकता का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है। दैनिक जीवन में मौजूद बहुभाषिकता के साथ-साथ पाठ्यसामग्री का भी बहुभाषिक होना आवश्यक होता है, खासकर छोटे बच्चों के लिए, जब वे अपनी मातृभाषा से होते हुए हिंदी की समझ विकसित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। इस पाठ्यपुस्तक में ऐसी गतिविधियाँ भी दी गई हैं जिनमें बच्चे हिंदी के शब्दों के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा में शब्द ढूँढ़ेंगे, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है— कक्षा-शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा बहुभाषिक शिक्षण पद्धति का उपयोग करना। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे पाठों को पढ़ाते हुए बच्चों को अपनी भाषा, परिवेश और संस्कृति से जोड़ते हुए शिक्षण कार्य करें। पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-कार्यों में बहुत सारी गतिविधियाँ, परिस्थितियाँ, परियोजना कार्य, शब्द एवं भाषा-खेल दिए गए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थियों के अनुभव-संसार को इन अभ्यास-कार्यों के माध्यम से अभिव्यक्ति के अवसर

प्रदान किए जाएँ। शिक्षक विद्यार्थियों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराएँ कि वे खेल-खेल में इन गतिविधियों को स्वयं करते हुए भाषा-कौशलों का विकास करें। साथ ही पाठों को पढ़ते-पढ़ाते हुए अपेक्षित दक्षताओं, भाषा-कौशलों एवं सीखने के प्रतिफलों को अवश्य ध्यान में रखें।

पाठ्यपुस्तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का आधार है, एकमात्र साधन नहीं। एक रचनात्मक एवं प्रतिबद्ध शिक्षक को निरंतर नवीन पाठ्यसामग्रियों का सहारा लेना ही पड़ता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ शिक्षकों को अपने-अपने विद्यार्थियों का स्तर देखते हुए स्वयं ही तय करना पड़ता है कि उन्हें किस प्रकार की पाठ्यसामग्री और गतिविधियाँ उपलब्ध कराई जाएँ। उद्देश्य तो अंततः अपेक्षित भाषायी कौशलों एवं दक्षताओं का विकास ही है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक का निर्धारित उद्देश्यों और निर्देशों के अनुसार रचनात्मक उपयोग करेंगे जिससे शिक्षण-अधिगम प्रभावी होगा और बच्चे आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।